धारावाहिक 'क्या क्या कहूं'

मोहरा

म.क.रैना
मूल कश्मीरी (बॉतुल) : हिंदी अनुवाद - लेखक

श्यामाजी की आँखें बाहरी दरवाज़े पर टिकी हुई थीं। रात के साढ़े ग्यारह बज चुके थे पर उसके बेटे सुनील का कोई पता न था। यह पहला मौक़ा नहीं था जब सुनील देर रात तक घर न आया हो। बहुत समय से सुनील की आदतें बिगड चुकी थीं और वह यूँही देर से घर आया करता था। मुहल्ले के लोग भी उससे परेशान थे। ऐसा कोई दिन नहीं गुज़रता जब सुनील किसी न किसी से न झगडता। कभी वह किसी के बगीचे से फूल तोड लेता तो कभी किसी बच्चे के हाथ से उसका खिलौना छीन लेता। कभी किसी बच्चे को डराता धमकाता तो कभी किसी के साईकल की हवा निकाल देता। शायद ही ऐसा कोई दिन गुज़रता जब मुहल्ले के लोग उसकी शिकायत करने उसकी माँ के पास न आते। श्यामाजी हर एक से माफ़ी मांग लेती और अपनी किस्मत को कोस लेती।

सुनील पूरे मुहल्ले में बदनाम था। मुहल्ले के तमाम लोगों ने अपने बच्चों को उसके साथ खेलने से मना कर दिया था। श्यामाजी के लिये तो उसका होना न होना एक ही बात थी। उसे घर का हर काम स्वयं करना पडता। खरीदारी भी स्वयं ही करनी पडती। श्यामाजी के रिश्तेदार भी श्यामाजी के लिये चिन्तित थे। उनका कहना था कि समय गुज़रते श्यामाजी की आयु बढ़ती जा रही है। जवानी कब तक साथ देगी और फिर अकेली औरत कहाँ तक अपने आप को और अपने बिगडे हुये बेटे को सम्भाल पायेगी? सुनील के बारे में तो हर किसी ने सोचना ही छोड दिया था। उससे किसी प्रकार की उम्मीद रखना बेकार था। जो लडका अपनी माँ की ही जेब साफ करदे, वह दूसरे को क्या देगा? श्यामाजी को भी उससे अब कोई उम्मीद न थी। फिर भी जब तक वह रात को घर लौट कर न आता, श्यामाजी खाना न खाती थी। आखिर माँ का औलाद के प्रति मोह!

जब से सुनील की दोस्ती कमलावती के बेटे अशोक से हुई, तब से वह कुछ ज़्यादा ही बिगड गया। कमलावती इस मुहल्ले में तीन साल पहले आई थी। उसने गाँव की ज़मीन आदि बेच कर इसी मुहल्लें में एक बना बनाया घर खरीद लिया था। पैसा उसके पास बहुत था। उसका पति व्यापारी था और वह ज़्यादातर घर से बाहर ही रहता था। अशोक को हर दिन जेब खर्च के लिये एक मोटी रक़म मिलती थी जिसे वह कुछ घंटों में ही लटा देता। बचपन से ही उसे सिगेट की लत लगी हुई थी। सुनील आठवीं कक्षा

कमी सुनील में रह गई थी, वह अशोक के आने से पूरी हो गई। अब न उसे पढ़ाई से दिलचस्पी थी और न अपने घर से। पिता का देहांत उसके बचपन में ही हो गया था। माँ को वह उंगलियों पर नचाता था। न उसे किसी का डर था और न किसी की बात सुनने की तमीज़।

दस साल से श्यामाजी खून पसीना एक करके अपने घर को चला रही थी। उसके पति का पैंशन व घर की ऊपरी मँज़िल का किराया। यही उसकी आमदनी का ज़रिया था। स्वयं मैट्रिक पास थी इसलिये सुनील को थोड़ा बहुत पढ़ा भी लेती थी। सातवीं कक्षा तक सुनील को अच्छे अंक मिलते थे। उसके बाद वह क्यों बिगड गया, समझ में नहीं आया। दसवीं कक्षा तक आते आते वह पूरा बिगड चुका था। यदि माँ या मामा उसे कुछ कहते, तो वह उन्हें खाने को दौडता।

सुनील का एक और मित्र था जिसका नाम था रशीद। अशोक और रशीद पढ़ने लिखने में एक जैसे ही थे लेकिन गुज़ारे के हिसाब से रशीद अमीर था। उसके पिता कमाल साहब जंगलात के ठेकेदार थे। पहले पहले कमाल साहब भी ज़्यादा अमीर न थे पर दो तीन सालों से उन्होंने बहुत तरक्की की थी। पैसा कमाया तो अपने घर का नक्शा भी बदल दिया। पुराने मकान की उन्होंने कुछ इस तरह मरम्मत की कि वह बंगला बन गया। छत पर क्रास बाम लगाया गया और सिंगल के बदले टीन। मकान के अंदर व बाहर रंग रोगन किया गया। चटाईयाँ व दरियाँ निकाल कर क़ालीन बिछाये गये। निचली मँज़िल जिस में गाय बकरियाँ रहती थीं, को साफ करके हमाम में तबदील कर दिया गया। आँगन को गार्डन बनाया गया और इस के साथ ही कमाल दीन कमाल साहब बन गये।

कमाल साहब को सुनील से बहुत प्यार था। कहते हैं एक दिन सुनील, रशीद और उनके कुछ मित्र स्कूल से भाग कर नदी में नहाने गये। रशीद को तैरना नहीं आता था। ज्योंही उसने गहरे पानी में गोता लगाया, वह डूबने लगा। बाकी लडकों ने शोर मचाया और किनारे पर आ गये। एक लडका दौड कर कमाल साहिब को खबर देने गया। उस दिन सुनील ने कमाल दिखाया। वह पानी के अंदर कूद पड़ा और तैर कर उस जगह पहुँचने की कोशिश करने लगा जहाँ रशीद का सिर दिखाई दे रहा था। पानी का बहाव बहुत तेज़ था और सुनील की जान को भी खतरा था। पर उसने हिम्मत नहीं हारी। उसे किसी भी तरह रशीद को बचाना था। वह तैरना तो जानता था पर बहुत ज़्यादा महारत न थी। उसने हिम्मत की। ज़ोर लगा कर वह रशीद के पास पहुँचा और उसके बालों को पकड लिया। वापिस किनारे पर आना कठिन था। एक हाथ से रशीद को पकड कर वह आहिस्ता आहिस्ता किनारे की ओर तैरने लगा। इतनी देर में वहाँ बहुत लोग जमा हो गये। उनमें एक नाव चलाने वाला मल्लाह भी था। वह अपने कपडे निकाल कर पानी में कूद पडा। पानी उसके गले तक आ गया। सुनील ने जैसे तैसे उसके क़रीब पहुँच कर रशीद को उसके हाथों में थमा दिया। मल्लाह रशीद को लेकर किनारे पर आ गया। सुनील बेहाल था। किनारे पहुँचते ही वह गिर पडा। रशीद को ज़मीन पर लिटा कर मल्लाह ने उसकी पेट से पानी निकाला। तब तक कमाल साहब और उसकी पत्नी सीना पीटते हुये वहाँ पहुँच गये। कुछ देर बाद रशीद को होश आया। वह अब ठीक था। जब कमाल साहब ने दूसरे लडकों से रशीद के डूबने और सुनील के उसे जान पर खेल कर बचाने की बात सुनी, वह दीवानों की तरह रोने लगा। उसने सुनील को अपनी बाहों में झकड़ लिया और उसे चूमने लगा। सुनील अब भी हाँफ रहा था।

कमाल साहब ने नयी गाड़ी ली। गाड़ी लेकर जब वह पहली बार दस्तगीर साहब की दरगाह पर गये, सुनील को भी साथ ले गये। उसने सुनील से कहा, ''तुम मेरे बेटे के समान हो।'' उस दिन के बाद जब

कमाल साहब को सुनील के बचपन में ही पिता खो जाने का बहुत दुख था। यह पता लगने पर कि पिता के गुज़रने के समय सुनील की आयु केवल पांच साल थी, कमाल साहब को और धक्का लगा। उन का मानना था कि खुदा ने सब को एक जैसा ही पैदा किया है पर हालात उसे अच्छा या बुरा बना देते हैं। जब जब कमाल साहब का ड्राईवर रशीद को घर ले जाने के लिये स्कूल आता, सुनील भी गाड़ी में सवार होकर खुश हो जाता। इस तरह दस पंद्रह मिनट के लिये वह भी अपने आप को साहब जी के बराबर मानता। पर यह सच नहीं था। वह न तो साहब जी था और न कभी बन सकता था। और यही बात उस के दिल में बुरी तरह घर बनाये हुये थी। सुनील के आवारा होने की एक बड़ी वजह थी और वह वजह थी साहब जी। पर यह वजह किसी की समझ में न आई।

●●●

श्यामाजी के घर के सामने भास्करनाथ का बंगला था। भास्करनाथ डिवीजनल इंजीनियर थे। सुनील के पिता मोतीलाल व भास्करनाथ एक ही समय नौकरी में लगे थे। दोनों की नियुक्ति असिस्टेंट इंजीनियर के तौर पर हुई थी। मोती लाल रिश्वत नहीं लेते थे। काम काज में भी निपुण थे। अफसर लोग उन की बहुत कद्र करते थे पर ठेकेदार लोग उन के काम से खुश नहीं थे। चीफ साहब को भी वह पसंद थे। उन के दफ्तर में जब भी कोई बड़ी मीटिंग होती, वह मोती लाल को ज़रूर बुलाते। यह देख मोती लाल के बहुत सारे साथी जल जाते पर मन से कोई उन्हें बुरा नहीं कहता। आम तौर पर सब लोग मोती लाल की क़ाबिलीयत को मानते थे और उन की तरक्की की उम्मीद भी रखते थे।

मोती लाल की शादी के दो साल बाद सुनील पैदा हुआ। सुनील पांच साल का था जब मोती लाल की तबदीली लद्दाख हो गई। छोटे बच्चे से दूर होना मोती लाल के लिये बहुत मुश्किल साबित हुआ। अपना बच्चा किस को प्यारा नहीं होता पर मोती लाल कुछ ज़्यादा ही जज़्बाती थे। वह हर दिन अपने बच्चे के लिये नई नई बातें सोचते। कभी वह उसे इंजीनियर बना देते तो कभी डाक्टर। कभी वह उसे आई.ए.एस. करवाते तो कभी एल.एल.बी। कई बार श्यामाजी ने उन से कहा कि सुनील अभी बहुत छोटा है, अभी से क्योंकर वह उस के भविष्य के लिये इतना परेशान हो रहे हैं? पर मोती लाल कोई बात मानने को तैयार न थे। उन का कहना था कि पहले से सब कुछ सोच समझ कर रखना चाहिये और उसी के मुताबिक आगे चलना चाहिये। श्यामाजी के माँ बाप को भी उन की यह दूरंदेशी बहुत पसंद थी।

मोती लाल को लद्दाख जाना मुश्किल लगा। पर सरकारी आर्डर था, क्या कर सकते थे। यह अलग बात थी कि उन की पहचान बडे बडे अफसरों के साथ थी। वह चाहते तो अपना आर्डर कैंसल करवा सकते थे। पर वह अपने रसूख़ का नाजायज़ फायदा नहीं उठाना चाहते थे। उन का कहना था कि यदि हर कोई ऐसा ही सोच ले तो जायेगा कौन? आर्डर पाने के एक महीने बाद वह लद्दाख चले गये। लद्दाख छोटी जगह थी। वहाँ का माहौल कुछ अलग ही था। सरकारी कर्मचारी ज़्यादा तर कश्मीरी थे और भाईचारा बहुत था। कोई किसी की बुराई नहीं करता था। सब लोग मेल मिलाप से रहते थे और दुख दर्द में एक दूसरे के काम आते थे। पर मोती लाल दुखी थे। उन का मन किसी काम में नहीं लग रहा था। उन्हें हर समय अपने बच्चे की याद आ रही थी।

लगभग दो महीने लद्दाख में रहकर मोती लाल को सरकारी काम के सिलसिले में श्रीनगर आने का अवसर मिला। उस दिन वह बहुत खुश थे। सरकारी जीप में सवार होने के समय उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे वह हवा में उड रहे हों। गाडी चल पडी। गाडी में ड्राइवर के सिवा चार और आदमी थे जो आपस में

वापसी का क्या प्रोग्राम है?'' मोती लाल ने कुछ भी न सुना। वह एक ही बात सोच रहे थे, गाड़ी कब श्रीनगर पहुँचेगी?

पर गाड़ी श्रीनगर नहीं पहुँच सकी। पहाड़ी से उतरते समय वह एक तेल के टेंकर के साथ टकराई और पाँच सौ गज़ नीचे खाई में लुढ़क गई। कहते हैं, मिलिट्री की मदद से जब लाशें निकाली गईं, उन का बुरा हाल था। मृतक केवल अपने कपड़ों से ही पहचाने जा सके।

●●●

सुनील और भास्कर नाथ का बेटा साहब जी एक ही आयु के थे। साहब जी का असली नाम नरेश था पर माँ बाप उसे प्यार से साहब जी कहकर पुकारते थे। बडे आदमी का बेटा होने की वजह से उसका यही नाम आम हो गया। सुनील और साहब जी दोनों एक ही श्रेणी में पढ़ते थे पर उन के स्कूल अलग अलग थे। सुनील सरकारी स्कूल में पढ़ता था और साहब जी कॉनवंट में। भास्कर नाथ के दो बच्चे थे, साहब जी और बबली। बबली साहब जी से दो साल छोटी थी। भास्कर नाथ की ऊपर की कमाई बहुत थी। इस वजह से उनका रहन-सहन भी ऊंचा था। बबली सीधी साधी और नर्म स्वभाव की थी पर साहब जी राजकुमार की तरह रहता था। वह हर दिन स्कूल की वर्दी बदलता। आस्मानी रंग की कमीज़, गहरा नीला निकर और लाल टाई पहन कर और हाकी हाथ में लेकर जब साहब जी घर से निकलता तो सुनील उसे एक टक देखता रहता। साहब जी के पीछे पीछे उसका नौकर साहब जी का बैग लेकर चलता और उसे स्कूल की बस में चढ़ाकर वापस आ जाता। मोती लाल के मरने से पहले दोनों घरों के रिश्ते अच्छे थे। पर पति के मरने के बाद जब श्यामाजी के घर के हालात खराब हो गये तो भास्कर नाथ और उनकी पत्नी निर्मलाजी ने उन के यहाँ जाना बंद कर दिया। निर्मलाजी ने सोचा, इंसान की नज़र खराब होती है। क्या पता, श्यामाजी को हमारी संपन्नता पसंद आये न आये।

आहिस्ता आहिस्ता दोनों घरों में दूरी बढ़ गई। कुछ समय तक साहब जी सुनील को ज़बरदस्ती अपने घर ले जाता रहा और उसे अपने नये खिलोने दिखाता रहा। पर एक दिन, जब साहब जी ने बाहर से मंगवाई हुई कहानियों की किताब सुनील को दे दी, तो निर्मलाजी का खून खौल उठा। उसने ज़बरदस्ती वह किताब सुनील के हाथ से छीन ली। सुनील के साथ साथ साहब जी भी रो पड़ा। बस, उसके बाद साहब जी कभी न रोया। माँ बाप ने उसका सुनील से मिलना जुलना ही बंद कर दिया और दोनों मासूम अलग हो गये।

सुनील ज्यों ज्यों बढ़ता गया, त्यों त्यों उस का यह एहसास भी बढ़ता गया कि वह बहुत गरीब है। मोती लाल के मरने के समय सुनील बहुत छोटा था और उसे कुछ भी याद न था। पर भास्कर नाथ को देख कर उसको लगता कि उस के पिताजी भी वैसे ही रहे होंगे। यदि आज ज़िंदा होते तो वह भी उसके लिये उसी तरह खिलोने आदि लाते जिस तरह साहब जी के पिताजी साहब जी के लिये लाते थे। जिस दिन भास्कर नाथ अपने बेटे के लिये एक छोटी साईकल ले आये और नोकरों की मदद से साहब जी साईकल की सवारी करने लगा, उस दिन सुनील की आँखों से खून बहने लगा। लेकिन वह खून किसी ने नहीं देखा। न भास्कर नाथ ने, न निर्मलाजी ने और न ही श्यामाजी ने। उस दिन सुनील देर रात तक चिनार के नीचे बैठ कर रोता रहा और अपने पिता को ढूंढ़ता रहा।

●●●

साहब जी और बबली को पढ़ाने के लिये घर में भी ट्यूशन रखा हुआ था। जब भी उन का परिणाम

पूरे मुहल्ले में मिठाई बांटी जाती। भास्कर नाथ और उनकी पत्नी बबली को उतना लाड प्यार नहीं करते जितना वह साहब जी को करते थे। साहब जी के जन्मदिन पर घर में एक उत्सव का माहौल बनता था। निर्मलाजी सुबह सवेरे भिखारियों को एक एक सेर चावल और पांच पांच रुपये दान में देती। नौकर लोग साहब जी को कंधों पर उठाकर बाग में घुमाते। शाम के समय बालकनी को कंदीलों से सजाया जाता। साहब जी के मित्रों व खास रिश्तेदारों को खाने पर बुलाया जाता। जिस समय साहब जी केक काटता, तालियों की ज़ोर की आवाज़ आती। 'हप्पी बर्थडे' की आवाज़ सुनील अपने कमरे में बैठ कर सुनता। उसकी खिडकी से साहब जी की बालकनी साफ़ साफ़ दिखाई देती थी। श्यामाजी भी यह सब देख लेती और ठंडी साँस भरती। वह सुनील के जन्मदिन पर पीले चावल बनाती थी और उसकी पूजा करके पहले कव्वों को खिलाती थी। साहब जी के जन्मदिन का दृष्य देख कर सुनील को देर रात तक नींद नहीं आती और उस के मन में यह सवाल बार बार उठता 'यदि मेरे पापा ज़िंदा होते तो वह मेरे लिये कितना बडा केक लाते?' सुबह नींद से जाग कर वह अपनी माँ से सवाल करता, ''मेरे पापा को किसने लद्दाख भेजा था?''

●●●

रशीद के पिता कमाल साहब अच्छे आदमी थे। यह बात बार बार उसके मन को कुरेद रही थी कि सुनील के घर का गुज़ारा अच्छा नहीं है। वह चाहते थे कि किसी तरीक़े से वह श्यामाजी की मदद करें मगर उन की पत्नी रफ़ीका ने उनकी बात मानने से इनकार किया। रफ़ीका मन की बुरी नहीं थी। उसने कहा, ''ज़माना खराब है। दस लोग दस बातें करेंगे। इस से अच्छा है कि मैट्रिक पास करने के बाद आप सुनील को अपने साथ रखें। कुछ काम करेगा, चार आने कमायेगा और अपनी माँ की भी मदद कर सकेगा। खुदा की मेहरबानी हुई तो शायद ज़िम्मेवारी आते सुधर भी जाये।'' कमाल साहब को रफ़ीका की बात ठीक लगी। उसने रफ़ीका से कहा, ''कोई फैसला करने से पहले श्यामाजी से भी पूछना चाहिये। क्या पता, उसने कुछ और सोच लिया हो!'' यह बात पहले से तय थी कि सुनील और रशीद आगे पढ़ाई करने के क़ाबिल नहीं है। रशीद को वैसे भी कमाल साहब का ही कारोबार संभालना था।

श्यामाजी ने लोगों से कमाल साहब की अच्छाईयों के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। उसे यह भी मालूम था कि वह सुनील को अपने बेटे के बराबर समझते हैं। मैट्रिक का नतीजा आया। रशीद फेल था पर सुनील पास हुआ। उसके अंक भी उतने खराब नहीं थे। सेकंड डिवीजन था। रशीद के बारे में रफ़ीकाजी को पहले से मालूम था कि वह पास नहीं होगा। पर सुनील के पास होने से उसे बहुत खुशी हुई। सुनील के बारे में बात करने के लिये जब वह श्यामाजी के घर आई तो श्यामाजी ने इनकार नहीं किया। वह तो यह जान कर खुश हुई कि कमाल साहब उस को अपने साथ रखना चाहते हैं। उसने सोचा कि कमाल साहब की नज़र के सामने रहेगा तो शायद ज़िंदगी में कुछ कर पायेगा। उसने रफ़ीकाजी से कहा, ''मेरे ऊपर यह कमाल साहब का एहसान होगा। मुझे कमाकर न देगा और अपने लिये ही कुछ कमा पायेगा, वह भी बडी बात है। मैं कब तक ज़िंदा रहूंगी?'' पर उसके मन में एक शंका थी। उसने रफ़ीकाजी से कहा, ''यह सब तो ठीक है। पर आप को मालूम है कि मेरा बेटा आवारा है। उसने आज तक कोई ज़िम्मेवारी नहीं उठाई है। जो अपने घर का नहीं हुआ वह दूसरे के घर को क्या सम्भालेगा, यही मेरी चिंता है। भगवान न करे कोई गलत काम कर जाये तो मैं क्या मुँह दिखाऊंगी।'' मगर रफ़ीकाजी

आप किसी प्रकार की चिंता न करें। हमें केवल आप की स्वीकृति चाहिये। कमाल साहब को पूरा यकीन है कि वह एक अच्छा लडका है पर हालात का मारा हुआ है।'' श्यामाजी कुछ न बोल पाई। वह रफ़ीकाजी की बात सुन कर शर्मिंदा हो गई।

सुनील कमाल साहब के पास नौकरी करने आ गया। कमाल साहब ने सुनील और रशीद दोनों को अपना अपना काम समझाया। रशीद को जंगलों की ज़िम्मेदारी दी गई और सुनील को आफिस सम्भालने की। कमाल साहब ने दोनों के लिये एक नई गाड़ी का इन्तज़ाम कर दिया। गाड़ी देख कर सुनील के चेहरे का रंग खिल उठा। उस के मन की मुराद पूरी हो गई। कमाल साहब के मुनीम जी ने उस को आफिस का पूरा हिसाब किताब समझाया। सुनील दिमाग का तेज़ निकला। छः महीने में ही वह अपने काम काज में माहिर हो गया और मुनीम जी की ज़िम्मेदारी बहुत हद तक कम हो गई। उसे यक़ीन हो गया कि समय चलते सुनील सारा काम अकेले ही सम्भाल सकता है। यह बात उसने कमाल साहब को भी बतायी। कमाल साहब बहुत खुश थे क्योंकि रशीद ने भी अपने काम को पूरी तरह सम्भाल लिया था और रशीद व सुनील के बीच ताल मेल भी अच्छा था। कमाल साहब के कहने पर सुनील अपनी आधी तनख्वाह अपनी माँ को देता था हालांकि बाकी पैसा वह अपने आप पर ही उडाता था। श्यामाजी को इस बात की खुशी थी कि उसका बेटा कमाने लगा है। कमाल साहब का कहना था कि बच्चों पर कभी सख्ती नहीं करनी चाहिये। उसकी बात सही निकली। समय के साथ साथ सुनील में उदारता भी आ गई।

●●●

साहब जी पी.एच.डी. करना चाहता था पर इस में उसके पिता की रुचि नहीं थी। वह उसे डॉक्टर बनाना चाहते थे। साहब जी ने एम.बी.बी.एस. किया। भास्कर नाथ ने अपनी ज़िंदगी में बहुत पैसा कमाया था। नाम कमाने के लिये उसने बेटे को आगे की पढ़ाई करने लंदन भेज दिया। इसके लिये उन्हें कितना पैसा देना पडा, यह उन्होंने किसी को नहीं बताया। उन्होंने कहा कि साहब जी को लंदन की यूनिवर्सिटी से ही ऑफर आई थी।

भास्कर नाथ के पास पैसों की कमी नहीं थी। साहब जी ने जितना पैसा मांगा, भास्कर नाथ ने भेज दिया। वैसे भी उसका सब कुछ बेटे के लिये ही था। उसने निर्मलाजी से कहा, ''लडकी हमेशा पराया धन होती है। उसकी शादी होगी तो अपने घर जायेगी। हमारे पास जो भी है, सब साहब जी का ही तो है। देख लो, बहुत बडा डॉक्टर बन कर आयेगा। बडे बडे अस्पतालों से ऑफर आयेगी। लंदन की डिग्री और यहाँ की डिग्री में ज़मीन आसमान का अंतर है। एक और बात कहे देता हूं। उसके आने से पहले ही मैं उसके लिये नयी गाडी लाकर रखूंगा।'' निर्मलाजी खुश हुई पर कुछ सोच कर उसने कहा, ''आप तो कहते थे कि जितना पैसा था, सब साहब जी की पढ़ाई पर खर्च हो गया। नई गाडी के लिये पैसा कहाँ से आयेगा?'' भास्कर नाथ ने समझाया, ''पैसा कहाँ है? इस समय तो ऑफिस में भी कोई खास काम नहीं चल रहा है। मैंने अपने जी.पी.फंड से पैसा निकालने के लिये प्रार्थना पत्र दिया है। इसी सप्ताह मिलने की आशा है।'' ''मगर ....'' निर्मलाजी कुछ कहना चाह रही थी कि भास्कर नाथ ने उसकी बात काट दी, ''आगे हमें जी.पी.फंड के पैसों की कहाँ ज़रूरत रहेगी। मैं कहता हूं जितना पैसा मैंने कमाया, उससे हज़ार गुणा हमारा बेटा कमायेगा। बस, एक बार लोगों को पता चले कि साहब जी किसका बेटा है।''

पर लोगों की समझ में कुछ न आया। चमचमाती नई गाड़ी आंगन में साहब जी की प्रतीक्षा करती रही पर वह न आया। उसने लंदन से संदेश भेजा कि उसे वहाँ के ही एक बडे अस्पताल में नौकरी मिली है,

से उसने बबली से पानी मांगा। पानी पीकर उसने भास्कर नाथ की तरफ देखा। भास्कर नाथ की आँखों में अजीब चमक थी। उसने निर्मलाजी से कहा, ''यह गर्व की बात है कि हम साहब जी जैसे बेटे के माँ बाप हैं। मुझे पहले से शक था कि वह लोग उसे यहाँ नहीं आने देंगे। अरे, वहाँ के बडे बडे अस्पताल वाले उसके पीछे लग गये होंगे। मैं कहता हूं, अब तुम भी तैयार हो जाओ। बहुत जल्द वह हमें भी वहाँ बुला लेगा। बाद में देख लेना .....'' भास्कर नाथ कहता रहा पर निर्मलाजी कुछ भी न सुन रही थी। वह आधी से ज़्यादा लंदन पहुँच चुकी थी। लंदन में होने का भास मिलते ही उसने भास्कर नाथ से कहा, ''भगवान करे, हमें भी जल्दी इस नरक से छुटकारा मिले।''

●●●

छः सात साल में कमाल साहब ने बहुत तरक्की की। उसे काफ़ी पैसा मिला और वह शहर के बडे रईसों में गिनने लगा। सुनील का काम और उस की लगन देख कर वह पहले ही सन्तुष्ट थे पर एक घटना ने सुनील की ज़िंदगी में एक और इनक़लाब लाया।

आर्मी हेडक्वार्टर ने फौज के लिये साल भर लगने वाली जलाने की लकडी सपलाई करने का टेंडर निकाला। काम करोडों का था। बडे बडे ठेकेदार सामने आये पर सबके मन में कमाल साहब का डर था। उनको मालूम था कि कमाल साहब इस काम में बहुत अनुभवी हैं और उन से कोई जीत नहीं सकता है। उन्होंने कमाल साहब को बरादरी करके टेंडर भरने की विनती की लेकिन वह न माने। उन्होंने कहा, जिसकी किस्मत में होगा, उसे मिलेगा। लालदीन नाम का एक ठेकेदार यह काम किसी भी सूरत में ऐंठना चाहता था। उसने तमाम टेकेदारों को पैसा देकर अपनी तरफ़ कर लिया लेकिन कमाल साहब के साथ उसकी बात न बनी।

लालदीन धूर्त आदमी था। उसे मालूम हुआ कि कमाल साहब के आफ़िस का सारा काम सुनील देखता है। उसे पूरा यक़ीन था कि कमाल साहब सुनील से ही अपना टेंडर लिखवायेंगे। यही हुआ भी। कमाल साहब ने शाम को सुनील के हाथों अपना टेंडर लिखवाया और सील कर दिया। दूसरे दिन सवेरे ही लालदीन अपने एक साथी को साथ लेकर सुनील के घर पहुँचा। उसने सुनील को आवाज़ दी। सुनील बाहर निकला। वह लालदीन को नहीं जानता था। लालदीन ने बहाना करके उसे अपनी गाडी में बिठाया और एक होटल में पहुँचाया। लालदीन अपने साथ एक लाख रुपये लाया था। उसने सुनील से कहा, ''देखो बेटा! यह एक लाख रुपये हैं। यह तुम्हारा इनाम है। किसी को कानों कान खबर न होगी। तुम्हें केवल कमाल साहब के टेंडर की रेटें हमें बतानी होंगी।'' सुनील सोचने लगा। लालदीन ने भरोसा दिलाया और कहा, ''हम पर भरोसा रखो। खुदा गवाह, हमारी ज़बान नहीं खुलेगी।'' सुनील मान गया। उसने लालदीन से कहा, ''मुझे ज़बानी कुछ भी याद नहीं है। पर टेंडर भरने से एक घंटा पहले मैं आप को सारी रेटें बताऊंगा।'' लालदीन खुश हुआ। फैसला हुआ कि मुकर्रर समय पर वह एक मुकर्रर जगह पहुंचेंगे जहाँ सुनील उनको एक परचे पर लिखकर सारी जानकारी देगा।

तय किये हुये समय पर सुनील उस जगह पहुँचा और कोई बात किये बिना ही उसने लालदीन के हाथ में एक परचा थमा दिया। लालदीन ने परचे को पढा। चेहरे पर लाली छा गई। सुनील चला गया।

टेंडर खोले गये। कमाल साहब का टेंडर सबसे कम था। इसलिये काम उसी को मिल रहा था। बाकी ठेकेदार उसके पास आकर उसे बधाइयाँ देने लगे। पर बधाई देने वालों में लालदीन नहीं था। वह चक्कर खाकर जमीन पर गिर पडा था और उसके साथी उसे पंखा झेल रहे थे और पानी पिला रहे थे।

लालदीन का चेहरा गुस्से से लाल था। वह सुनील का खून पीना चाहता था। एक लाख रुपये सुनील को देने की बात कमाल साहब को सुनाने के लिये वह अपने साथी को लेकर उस के घर पर आया। उसने कमाल साहब को सारी बात बता दी। कमाल साहब सुनते रहे। जब लाल दीन कह चुका तो कमाल साहब ने सुनील को आवाज़ दी। सुनील रुपयों से भरा हुआ बैग लेकर आया और कमाल साहब के सामने रख दिया। लालदीन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। कमाल साहब ने बैग लालदीन की तरफ धकेला और कहा, ''मुझे यह पूरी कहानी मालूम है। सुनील ने मुझे सारी बात बताई थी और मैंने ही उसे परची पर रेट लिख कर दिये थे। वह चाहता तो रुपये लेकर आप को तमाम जानकारी देता और मुझे कानों कान खबर न होती। पर उसने ऐसा नहीं किया क्योंकि वह ईमानदार माँ बाप का बेटा है। ईमानदारी का ऐसा सबूत देकर उसने न केवल अपने माँ बाप का नाम रोशन किया है बल्कि मेरी भी इज़्जत रखी है। मुझे पूरा यकीन था कि वह एक लाल है और उसे हालात ने बुरा बना दिया है। आज की घटना ने यह साबित कर दिया है कि मेरी सोच सही थी। मुझे उस पर गर्व है। आज से मेरे सचमुच के दो बेटे हैं, रशीद और सुनील।'' यह कहते कहते कमाल साहब का गला भर आया। लालदीन शर्मिंदा हुआ और उसने कमाल साहब से माफी मांगी। सुनील की तरफ देखते हुये उसने कहा, ''काश मेरे पास भी तुझ जैसा एक होता!''

कमाल साहब ने वादा पूरा करके दिखा दिया। रशीद तो मालिक था ही, उसने कारोबार में छः आने सुनील के नाम भी कर दिये। कम्पनी को नया नाम दिया गया 'कमाल ऐंड एसोशिऐटस - फारेस्ट लेसीज़'। श्यामाजी को यकीन नहीं हो रहा था। आज उसके मोहरे ने बाज़ी पलट दी थी। वह अपनी आँखें मूंद रही थी, यह सपना है या सच? अपने स्वर्गवासी पति के फोटो पर माला चढ़ाते हुये बोली, ''आज आप का नाम रोशन हुआ है।''

नये काम में बहुत फायदा हुआ। सुनील के नाम के साथ अब 'जी' जुड गया और वह सुनील जी हो गया। एक ही साल में सुनील जी ने अपनी नई गाड़ी ली। पुराना मकान बेच कर उसने बरज़ुला में नया बंगला बनवाया। श्यामाजी अब सेठानी थी। उसे किसी चीज़ की कमी नहीं रही। कमाल साहब की वह शुक्रगुज़ार थी क्योंकि उन्होंने ही उसके बिगडे लाल को सही रास्ता दिखाया था। उस की ज़बान पर हमेशा यही बात रहती 'कमाल साहब का ऋण कैसे चुकाऊँ?'

●●●

एक साल लंदन में नौकरी कर साहब जी छुट्टी पर घर आ गया। वह किसी भी सूरत में कश्मीर में रहने को तैयार न था। वह लंदन में ही बसना चाहता था। उसने अपने माता पिता को भी इस बात के लिये राज़ी कर लिया कि पिताजी के रिटायर होने के बाद वह बेटे के साथ लंदन में ही रहेंगे। भास्कर नाथ और निर्मलाजी बहुत खुश थे। भास्कर नाथ के रिटायर होने में अब केवल चार साल रह गये थे। उसने निर्मलाजी से कहा, ''यह चार साल देखते देखते निकल जायेंगे। तब तक बबली की भी शादी हो जायेगी। मैं भी सोचता था कि रिटायर होकर यहाँ क्या करेंगे। यह भी कोई जगह है रहने की?'' भास्करनाथ ने जब से लंदन ब्रिज और थेम्स नदी का फोटो किसी कैलंडर में देखा था, तब से उसे लंदन देखने की लालसा कुछ ज़्यादा ही बढ़ गई थी। ''देख लो, महागणेश ने आपकी बात सुन ही ली'', निर्मलाजी बोली। उसी समय उस ने महागणेश के दरबार में 'रोठ' चढ़ाने का प्रण भी किया।

साहब जी पंद्रह दिन रहने के बाद लंदन वापस निकल गया। जाते जाते उसने माता पिता से आग्रह किया, ''अगले साल एक दो महीने के लिये घूमने के लिये आ जाओ। मैं टिकट भेज दूंगा।'' पर भास्कर नाथ ने उसकी बात नहीं मानी। उसने कहा, ''चार साल के बाद आना ही है। अभी से फिज़ूल खर्ची क्यों करें।'' साहब जी को अपने पिता की बात माननी पडी। एक बात निर्मलाजी ने साफ कर दी, ''एक दो साल के अंदर ही तुम्हारी शादी करानी है। कोई अच्छी लडकी देखकर मैं उसका फोटो भेज दूंगी। यह बताओ, तुम्हें कितनी पढ़ी लिखी लड़की चाहिये?'' साहब जी ने माँ की बात काट दी। कहा, ''इस में मुझसे क्या पूछना है? जो आप पसंद करेंगे, मुझे मंज़ूर होगा। मैं थोडे ही आप लोगों की सोच से ऊपर हूँ।'' बेटे की बात सुन कर निर्मलाजी गद्गद् हो गई। सोचा, मेरा बेटा तो लाल है। इसे किसी की नज़र न लगे।

साहब जी सचमुच ही लाल निकला। उसने बबली की शादी से पहले अपनी शादी करना मंज़ूर ही न किया। बबली एम.एस.सी. कर चुकी थी और वह एक कालेज में लेकचरर का काम कर रही थी। उसकी शादी मोहन कृष्ण के साथ हो गई। यह शादी भास्कर नाथ ने कुंडलियाँ मिला कर कराई थी। मोहन कृष्ण डाक्टर था। वह नर्म तबीयत का आदमी था और दहेज के बिलकुल खिलाफ़ था। उसके माता पिता भी बहुत अच्छे आदमी थे। उन्होंने भास्कर नाथ से कभी कोई फ़रमाइश नहीं की, हालांकि लोगों से उन्होंने सुना था कि भास्कर नाथ ने ज़िंदगी में बहुत पैसा कमाया है। अब तो बेटा भी लंदन में कमा रहा है, तो क्या पैसा न होगा? लेकिन उनका कहना था, ''हमारे लिये तो हमारे बेटे की कमाई ही बहुत है। दूसरों के पैसे पर क्यों नज़र रखें?'' बबली और मोहन कृष्ण भी एक दूसरे से शादी करके बहुत खुश थे। भास्कर नाथ की आर्थिक हालत इस समय अच्छी नहीं थी। फिर भी उस की तरफ से जो मुमकिन हो सका, किया। साहब जी की तरफ से कोई मदद न मिली। उसने कहा, ''मैं मकान खरीदने के बारे में सोच रहा हूँ और खर्चा बहुत है।''

साहब जी बबली की शादी पर केवल आठ दिन के लिये आया था। वह पुराना अस्पताल छोड़ कर एक नये अस्पताल में गया था। इस वजह से ज़्यादा छुट्टी न मिल सकी। बेटी और दामाद के सामने जब निर्मलाजी ने उसकी शादी क बात उठाई तो उसने साफ इनकार किया। उसने कहा, ''जब तक मैं पूरी तरह सेटल नहीं होता तब तक शादी करने का सवाल ही नहीं।'' निर्मलाजी को बेटे का यह जवाब पसंद नहीं आया। अबकी बार उसे साहब जी के अंदर एक बदलाव सा नज़र आया। उसके वापस जाने के बाद जब निर्मलाजी ने भास्कर नाथ के साथ यह बात उठाई, तो उसने कहा, ''बच्चा है। नई नौकरी है। तो क्या परेशान नहीं होगा! और वहाँ उसका हौसला बढ़ाने के लिये कौन है? सब कुछ खुद ही करना पड़ता होगा। जब तक हम वहाँ नहीं जाते, तब तक बेचारे को मुसीबत ही झेलनी है।'' निर्मलाजी ने ठंडी साँस ली। अब तक जो बोझ उसके दिल पर था, वह भास्कर नाथ की बात से दूर हो गया। फिर भी परेशानी तो रही ही। साहब जी की शादी हो जाती तो घर में बहू आती। उसने बेटे के लिये एक लड़की भी देख ली थी। सुन्दर और सुशील लडकी। निर्मलाजी को यक़ीन था कि यदि वह लड़की उसके घर में बहू बनकर आती तो सास की भरपूर सेवा करती। वह यह भी सोच रही थी कि शादी के तुरंत बाद साहब जी थोडे ही बहू को साथ लेकर जायेगा। साल डेढ़ साल उसको सास के पास तो रखेगा ही, जब तक भास्कर नाथ भी रिटायर हो जायेंगे। बाद में सब एक साथ ही जायेंगे।

पर निर्मलाजी का यह अरमान पूरा न हो सका। पूरे एक साल साहब जी ने तीन पत्र लिखे। शादी के

लिखना भी बंद हो गया। भास्कर नाथ और निर्मलाजी परेशान थे। भास्कर नाथ के रिटायर होने का समय क़रीब था। उनकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि लंदन जाने की तैयारी करें तो कैसे करें। पूरा प्रोग्राम बनाकर जाना होगा कि नहीं?

भास्कर नाथ को ज़्यादा देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। रिटायर होने से पहले ही उसे साहब जी का एक पत्र मिला। पत्र की बात सुनते ही निर्मलाजी सीढ़ियों से गिर गई। भास्कर नाथ लिफाफा खोलकर पत्र पढ़ने लगे। धीरे धीरे उनके चेहरे का रंग फ़ीका पड गया। पत्र हाथों से नीचे गिर गया। निर्मलाजी बुत की तरह देखती रही। भास्कर नाथ मुँह से कुछ बोल ही नहीं पाये। उनकी आखें साहब जी के फोटो को देख रही थीं। हिम्मत करके निर्मलाजी ने बेटे का पत्र हाथ में लिया और पढ़ने लगी।

●●●

आज भास्कर नाथ का जन्मदिन था। उन्हें रिटायर हुये क़रीब एक साल हो गया था। वह मोहन जी के साथ बैठक में बैठे हुये थे। बबली किचन में माँ का हाथ बटा रही थी। मोहन जी भास्कर नाथ से कह रहा था, ''अब पुरानी बातें छोड दीजिये। इन बातों को छेड कर क्या फायदा। साहब जी की भी कोई मजबूरी रही होगी। या शायद उसने यह सोचा होगा कि कहीं आप इजाज़त ही न दें।''

वास्तव में साहब जी ने अपने साथ ही काम करने वाली एक लेडी डॉक्टर पद्मा के साथ शादी की थी। पद्मा के माता पिता बहुत अमीर थे पर उनके कोई बेटा न था जो पदमा की शादी के बाद उनकी देखबाल करता। पद्मा ने शादी से पहले ही यह शर्त रखी थी कि साहब जी को शादी के बाद उनके घर में ही रहना होगा। इस बात को साहब जी ने मंज़ूर कर लिया था। एक तो उसे पद्मा पसंद थी। दूसरे उसे पद्मा के माता पिता की सारी दौलत मिलने वाली थी। पद्मा की माँ की तबीयत ठीक नहीं थी। वह अपने जीते जी पद्मा की शादी कराना चाहती थी। साहब जी को अपनी शादी के मामले में माता पिता का हस्तक्षेप पसंद नहीं था। उसको मालूम था कि उसके माता पिता उसकी शादी कश्मीर में ही कराना चाहते हैं। पर उसे यह मंज़ूर नहीं था। साहब जी ने अब दुनिया देख ली थी। ''कहाँ लंदन में पढ़ी लिखी लड़की और कहाँ कश्मीर की लड़की? दोनों में ज़मीन आसमान का फर्क है। मुझे ज़िंदगी में आगे बढ़ना है कि पीछे जाना है?'' इस वजह से उसने अपनी शादी के बारे में किसी को खबर नहीं की। उसकी शादी वास्तव में बबली की शादी से भी पहले हो गई थी। इसलिये उसे बबली की शादी के दौरान वापस जाने की जलदी थी। मकान ख़रीदने की बात भी उसने ग़लत ही की थी। सच यह था कि उसने अपना सारा पैसा अपनी शादी पर ही खर्च किया था।

भास्कर नाथ ने मोहन जी की बात काट दी। उसने कहा, ''मुझे इस बात का खेद नहीं है कि उसने हमें बताये बिना शादी क्यों की। न ही यह अफसोस है कि वह हमें अपने साथ क्यों नहीं ले गया। मैं मानता हूँ कि हमारे वहाँ जाने से उसका खर्चा बढ़ जाता। और वह हमें अपने ससुराल में भी कैसे बिठाता? पर मुझे एक बात का अफसोस ज़रूर है। जब उसकी बीवी ने अपने माता पिता के बारे में सोच लिया तो उसने हमारे बारे में क्यों नहीं सोचा? उसने क्यों अपनी बीवी से यह नहीं कहा कि मेरे माता पिता को देखने वाला कौन है? उसने हमारे मुकाबले में पैसों को ज़्यादा पसंद किया। हमें उसके पैसे नहीं चाहिये थे। पर उसको यह याद नहीं रहा कि हम ने उसको किस तरह पाला है। क्या उसे यह बात मुझ से कहनी चाहिये थी कि सब लोग पैंशन पर गुज़ारा करते हैं तो आप क्यों नहीं कर सकते?'' यह कहते कहते भास्कर नाथ की आँखों से आँसू निकल पडे। मोहन जी ने कहा, ''यह ठीक नहीं है। दिल छोटा मत

कहा, ''आप लोगों का ही सहारा है। आप न होते तो पता नहीं हमारा क्या हाल होता। हम आप दोनों का ऋण कैसे चुका सकते हैं? मैं सोचता था, मेरी असली जागीर मेरा बेटा है। पर वह ठीक नहीं था। सच तो यह है कि बेटी ही माता पिता की हमदर्द होती है।'' भास्कर नाथ का कहना सही था। उनके रिटायर होने के बाद उनकी बेटी ने ही उन को सहारा दिया। वह यह भूल ही गये कि उनका बेटा उनको छोड़ कर गया है।

●●●

सुनील जी की शादी का कार्ड देने के लिये श्यामाजी भास्कर नाथ के घर आई। गली में पहुँचते ही उसकी नज़र निर्मलाजी पर पडी। गाडी से उतर कर श्यामाजी ने उसे गले लगा लिया। निर्मलाजी को यकीन ही न आ रहा था कि श्यामाजी उनके घर आई है। जब से श्यामाजी नई जगह रहने के लिये गई, तब से वह पहली बार यहाँ आई थी। भास्कर नाथ ने भी उस की बड़ी आवभगत की। उन्होंने श्यामाजी से कहा, ''अपने बच्चे की शादी है तो क्या हम ही नहीं आयेंगे?'' श्यामाजी को छोडने के लिये निर्मलाजी बाहर तक उस के साथ हो ली। ड्राईवर ने गाड़ी का दरवज़ा खोला। गाड़ी में बैठते ही श्यामाजी को कुछ याद आया। उसने निर्मलाजी से पूछा, ''कोई बता रहा था आप लोग लंदन जाने वाले हैं। अब हमारे बेटे की शादी पर ही मत जाना।'' निर्मलाजी ने दिलासा दिया। उसने कहा, ''साहब जी बहुत कह रहा है। पर भास्कर नाथ जी को वहाँ जाना अच्छा नहीं लग रहा। वह कहते हैं कि अपनी जन्मभूमि और अपने रिश्तेदार छोडकर कोई कहीं क्यों जाये?''

●●●